an>

Title: Situation arising out of recent violence in Kashmir Valley resulting in threat to peace and security of people of the State, raised by Shri Jyotiraditya M. Scindia on 20th July, 2016 (Discussion Concluded).

गृह मंत्री (श्री राजनाथ सिंह) : माननीय अध्यक्ष महोदया, हम लोगों ने कल कश्मीर के मौजूदा हालात पर चर्चा की। मुझे खुशी है कि इस चर्चा में इस सदन के 28 सदस्यों ने हिस्सा लिया था। जिन सदस्यों ने इस सदन में कश्मीर के मुद्दे पर चर्चा में हिस्सा लिया था, मैं उनके नाम का उल्लेख यहाँ पर करना चाहूँगा। वे हैं - सर्वश्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, अनुराग सिंह ठाकुर, ए. अनवर राजा, कल्याण बनर्जी, तथागत सतपथी, मुलायम सिंह यादव, अरविन्द गणपत सावंत, थोटा नरसिम्हम, डॉ. बूरा नरसैय्या गौड, मोहम्मद सलीम, वाराप्रसाद राव वेलगापल्ली, तारीक अनवर, प्रेम सिंह चन्दूमाजरा, एम.जे. अकबर, जयप्रकाश नारायण यादव, भगवंत मान, डॉ. अरूण कुमार, मुज़फ्फर हुसैन बेग, बदरुद्दीन अजमल, दुष्यंत चौटाला, कौशलेन्द्र कुमार, ई.टी. मोहम्मद बशीर, सी.के. संगमा, असदुद्दीन ओवैसी, अधीर रंजन चौधरी, जुगल किशोर शर्मा, एन.के. प्रेमचन्द्रन, प्रो. सुगत बोस और राजेश रंजन।

महोदया, मैं यह कहना चाहूँगा कि जिन माननीय सदस्यों ने इस विषय पर अपने विचार व्यक्त किये हैं, मैं सबसे पहले उनके प्रति अपना आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। इसके पहले राज्य सभा में भी कश्मीर के मौजूदा हालात पर चर्चा हुई है। राज्य सभा में इस पर हुई चर्चा के बाद लोक सभा में इस मुद्दे पर जो चर्चा हुई है, उससे मुझे बहुत ही सुखद अनुभूति हुई। मैं यह कह सकता हूँ कि जो मेरा विश्वास और भरोसा था, मेरा वह विश्वास और भरोसा मजबूत हुआ है। जब भी कोई बड़ी चुनौती हमारे देश के सामने खड़ी होगी, तो लोग अपने सारे मतभेदों को भुलाकर उस चुनौती का मुकाबला करने के लिए एकजुट होकर खड़े होंगे। यह विश्वास और भरोसा मेरे अंदर पैदा हुआ है। एक विश्वास और भरोसा मेरे अंदर यह पैदा हुआ है। मैं जानता हूं कि कश्मीर में जिस प्रकार के इस समय हालात हैं, उसको लेकर इस समय सब के मन में पीड़ा हुई है। सभी की पीड़ा के साथ मैं अपनी पीड़ा को भी सम्बद्ध करना चाहता हूं।

जहां तक हमारे प्रधानमंत्री जी का प्रश्न है, कल चर्चा के दौरान यह बात आयी थी कि उस समय हमारे प्रधानमंत्री जी विदेश यात्रा पर थे। लेकिन मैं सदन को यह जानकारी देना चाहता हूं कि विदेश यात्रा पर होने के बावजूद प्रधानमंत्री जी ने बराबर मुझ से सम्पर्क बनाकर रखा। कश्मीर के हालात के बारे में उन्होंने मुझ से जानकारी हासिल की और वहां के हालात को सुधारने के लिए आवश्यक सुझाव भी वह बीच-बीच में देते रहे। मैंने यह महसूस किया कि उनके अंदर भी कश्मीर के मौजूदा हालात को लेकर एक बेहद तकलीफ़ थी और उसको लेकर वह चिंतित थे। वह विदेश से 12 तारीख को लौटे और पहली बैठक हमारे प्रधानमंत्री जी ने की है तो वह कश्मीर के हालात का जायज़ा लेने के लिए उन्होंने की है। क्या-क्या हमें करना चाहिए, इन सारे सवालों पर उन्होंने विस्तारपूर्वक बातचीत की है।

महोदया, चर्चा में जो भी बातें निकलकर आयी हैं, मैं उन सभी बातों पर विस्तार में जाकर चर्चा नहीं करना चाहूंगा, लेकिन मैं यह कहना चाहूंगा कि भारत का एक विशिष्ट चरित्र है और भारत का वह विशिष्ट चरित्र है, 'विविधता में एकता - Unity in diversity'. चाहे वह राज्य सभा हो या लोक सभा हो या चाहे हमारा यह देश हो, यहां विभिन्न प्रकार की भाषा बोलने वाले लोग, विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग, विभिन्न प्रकार की बोलियां बोलने वाले लोग और विभिन्न प्रकार के खान-पान वाले लोग भारत देश में मौजूद हैं और उनके प्रतिनिधि के रूप में भारत की संसद में हम सब लोग मौजूद हैं। लेकिन जब देश में कोई संकट खड़ा होता है तो अध्यक्ष महोदया मैं कहना चाहूंगा कि सारे भेदभावों को भुलाकर सारा देश एकजुट होकर उसका मुकाबला करने के लिए खड़ा हो जाता है। वहीं, हम सभी के विचारों में भिन्नता होने के बावजूद हमारी पूरी संसद भी एकजुट होकर खड़ी हो जाती है।

महोदया, जहां तक जम्मू-कश्मीर का सवाल है, हम लोग यह मानते हैं कि जम्मू-कश्मीर भारत का मुकुट है। जम्मू-कश्मीर के संबंध में मैं यहां अमीर खुसरो साहब की एक उक्ति का उल्लेख करना चाहूंगा। उन्होंने कहा था कि इस दुनिया की ज़मीं पर सचमुच में स्वर्ग के समान यदि कोई जगह है, तो उस जगह का नाम कश्मीर है। उन्होंने कहा था-

'गर फिरदोस बर-रू-ए-जमीन अस्त,

हमीन अस्त-ओ, हमीन अस्त-ओ, हमीन अस्त-ओ।'

यानी दुनिया की जमीन पर सचमुच स्वर्ग के समान कोई धरती है तो वह कश्मीर की धरती है। यह बात अमीर खुसरो साहब ने कही है।

अध्यक्ष महोदया, इस सच्चाई को भी कोई नकार नहीं सकता है कि हमारे एक पड़ोसी की बुरी नजर हमारे कश्मीर पर है जो कि स्वर्ग के समान है, उस पर लग गयी है। लेकिन मैं संसद के दोनों सदनों के माननीय सदस्यों के मूड को देखने के बाद पूरी तरह से आश्वस्त हूं कि हमारे कश्मीर का जो पुराना गौरव रहा है, जो कश्मीर की एक शोहरत रही है, उस गौरव और शोहरत को पुनः बहाल करने में हम निश्चित रूप से कामयाबी हासिल करेंगे।

इस हकीकत को कोई नकार नहीं सकता है कि आज कश्मीर के जो हालात हैं, उनको बिगाड़ने में यदि किसी की अहम भूमिका है तो हमारे पड़ोसी की भूमिका है। हमारा वह पड़ोसी, जो मज़हब के नाम पर भारत से अलग हुआ था, उस समय हम लोगों ने सोचा था कि मज़हब के नाम पर भारत के विभाजन की मांग की जा रही है, शायद मज़हब के आधार पर भारत का विभाजन हो जाएगा तो सब अपनी-अपनी तरह से अपनी जिंदगी जीएंगे और जो भी मुल्क मिलेगा, उस मुल्क के विकास के लिए जो कुछ भी हो सकता है, वह करेंगे। वैसे, मैं जानता हूं कि उस समय की हिन्दुस्तान की मैजोरिटी यह नहीं चाहती थी कि यह विभाजन होना चाहिए, लेकिन भारत का विभाजन हुआ। लेकिन उसके बावजूद आज हमारा पड़ोसी देश किस प्रकार की नापाक हरकतें कर रहा है। भारत को डीस्टेबिलाइज करने की कोशिश कर रहा है। मैं दो टूटक शब्दों में कहना चाहता हूं कि भारत में यदि आतंकवाद है तो वह पाकिस्तान द्वारा स्पांसर्ड आतंकवाद है। वह पाकिस्तान जो मजहब के नाम पर बना था, हमसे अलग हुआ था, वह अपने मजहब के लोगों को भी एक साथ नहीं रख पाया और उस पाकिस्तान के दो टुकड़े हो गये। आज पाकिस्तान की हालत ऐसी है कि वहां की हर तंजीमों के बीच हर इलाके में बराबर घमासान चलता रहता है। आज अपने हालात को सुधारने की बजाय पाकिस्तान अपनी तरफ से भारत को डीस्टेबिलाइज करने की बराबर कोशिश कर रहा है। शायद उसकी यह कोशिश है कि उसकी जो विफलताएं हैं, उन विफलताओं की ओर से वह सारी दुनिया का अटेंशन डाइवर्ट कर सके।

मैं बतलाना चाहता हूं कि भारत में रहने वाले जो हमारे मुस्लिम भाई हैं, इस्लाम को मानने वाले जो लोग हैं, पाकिस्तान को उनकी चिंता करने की जरूरत नहीं है। मैं कह सकता हूं कि जब भी कोई संकट की घड़ी आई है तो हिंदुस्तान का चाहे हिन्दू रहा है, मुस्लिम रहा हो, ईसाई रहा हो या सिख रहा हो, सब एकजुट होकर उसका मुकाबला करने के लिए खड़े हुए हैं और उन्होंने कामयाबी भी हासिल की है। मैं पहले भी कह चुका हूं कि भारत दुनिया में एक ऐसा इकलौता देश है, दुनिया में इस्लाम के जितने फिरके होते हैं, ये कुल 72 फिरके माने गये हैं, ये 72 फिरके यदि दुनिया के किसी एक देश में मिलते हैं तो वह हमारा सौभाग्यशाली देश भारत है, जहां 72 के 72 फिरके मिलते हैं। मैं समझता हूं कि दुनिया के किसी देश को भारत के इस्लाम को मानने वाले लोगों की रक्षा करने का दावा नहीं करना चाहिए, मैं अपने पड़ोसी को यह भी कहना चाहता हूं। मैं सदन को अटल जी की एक कविता की याद दिलाना चाहता हूं -"चिंगारी का खेल बुरा होता है, औरों के घर में आग लगाने का सपना अपने ही घर में अवसर खरा होता है, चिंगारी का खेल बुरा होता है।" यह श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा था।

मैं पूरी संजीदगी के साथ यह भी कहना चाहता हूं कि जिन लोगों ने भी कश्मीर में अपनी जान गंवाई है अथवा जो भी घायल हुए हैं, उसका हम सभी को बेहद अफसोस है। इसी कश्मीर के बारे में आदरणीय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने तीन सूत्र दिये थे। उन्होंने कहा था - कश्मीरियत, जम्हूरियत और इंसानियत। ये तीन सूत्र श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने दिये थे। लेकिन आज क्या हो रहा है, कश्मीरियत की जम्हूरियत में यदि किसी का स्थान हो सकता है तो इंसानियत का हो सकता है। कश्मीरियत की जम्हूरियत में हैवानियत का कभी कोई स्थान नहीं हो सकता है। लेकिन आज कभी-कभी कुछ इस प्रकार के हालात देखने को मिलते हैं कि हमारे सिक्युरिटी फोर्सेज के जवान यदि मारे जाते हैं तो कुछ लोग ऐसे हैं, जो उस पर जश्न मनाने का काम करते हैं। क्या इसे इंसानियत कहेंगे? यह हैवानियत नहीं है तो क्या है, इसे और क्या कहा जाए।

महोदया, मैं यह मानता हूं कि हमारा कश्मीर का रहने वाला नौजवान भी देशभक्त है। हमारे कश्मीर के नौजवानों को कुछ लोगों ने बरगलाने की कोशिश की है। लेकिन यह हम लोगों की जिम्मेदारी है कि हमारे जिन नौजवानों को कश्मीर में बरगलाने की कोशिश की गई है, हम उससे उन नौजवानों को अलग करें। क्योंकि उनकी भी राष्ट्रभक्ति और देशभक्ति पर मैं कोई संदेह नहीं करना चाहता। यह एक मानसिकता होती है, जो नौजवानों के अंदर भारत की व्यवस्था के खिलाफ एक अनावश्यक और आधारहीन आक्रोश से भरने का काम करती है और उन्हें बरगलाती रहती है। सिर्फ कश्मीर ही नहीं, बल्कि मैं यहां छत्तीसगढ़ की भी चर्चा करना चाहता हूं कि वहां भी यही होता है। चाहे वह बस्तर हो, चाहे दंतेवाड़ा हो, हमारे हिंदुस्तान के कुछ और ऐसे क्षेत्र हैं, जहां सिक्युरिटी फोर्सेज के मारे जाने पर कुछ ऐसी विकृत मानसिकता के लोग हैं, जो उनके मरने पर जश्न मनाने का काम करते हैं। मैं समझता हूँ कि बहके हुए लोग, जिनकी मानसिकता को विकृत करने का

काम किया गया है कि न्यायालय से भी यदि कोई आतंकवादी दोषी करार दिया जाता है, उसके बाद भी यदि उसकी मौत होती है तो उसे ज्युडिशियल किलंग की संज्ञा देने का काम करते हैं, ऐसे भी लोग यहां पर हैं।

अध्यक्ष महोदया, मैं इतना जरूर कहना चाहता हूँ कि हमारे नौजवानों की आज जो यह विकृत मानसिकता है, उसमें बदलाव लाना होगा, व परिवर्तन करना होगा, उसे सुधारना होगा तो हम सभी लोगों को मिल-जुलकर इसे सुधारना होगा। कश्मीर के हालात को सुधारने का काम अकेले सरकार नहीं कर सकती है। कश्मीर के हालात को सुधारने के लिए सभी को मिल जुल कर काम करने की आवश्यकता है। ऐसा मैं महसूस करता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि जब से कश्मीर बना है, कोई भी सरकार रही हो और कोई भी प्रधान मंत्री रहा हो, मैं उसको दोषी नहीं ठहराना चाहता कि उसने कश्मीर के हालात को बिगाड़ने का काम किया है। कश्मीर के हालात को सुधारने की जितनी कोशिश हो सकती है, सबने अपने-अपने तरह से कोशिश की है। इसमें कहीं दो मत नहीं है। लेकिन कोई यह कह सकता है कि बराबर लगातार कोशिश की है तो क्या आपको कामयाबी हासिल होगी? मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि कश्मीर के हालात को सुधारने में हमको निश्चित रूप से कामयाबी हासिल होगी। ऐसा मुझे पूरा विश्वास है, पूरा भरोसा है। चाहे अपनी कितनी भी नापाक हरकतें हमारा पड़ोसी क्यों न करता रहे।

अध्यक्ष महोदया, अब यह कैसी विडंबना है कि यदि एक आतंकवादी यहां पर मारा जाता है तो उसको ले कर हमारा पड़ोसी पाकिस्तान में ब्लैक-डे मनाने का काम करता है। भारत के आंतरिक मामलों में उसे हस्तक्षेप करने का क्या अधिकार है?

अध्यक्ष महोदया, जम्मू-कश्मीर में जो भी घटना घटित हुई है, बहुत ही संक्षेप में उसकी जानकारी सदन को देना मैं आवश्यक मानता हूँ। पाकिस्तान अपनी तरफ से भरपूर यह कोशिश कर रहा है कि कश्मीर में घुसपैठ में तेज़ी आए। लेकिन सचमुच मुझे अपने नौजवानों पर नाज़ है, मैं उनकी बहादुरी को भी सल्युट करना चाहता हूँ कि वहां के सुरक्षा बलों ने जवाबी कार्यवाही की है। जिसके परिणामस्वरूप 86 आतंकवादियों को न्युट्रलाइज़ करने में कामयाबी हासिल हुई है। यह मैं इस वर्ष की जानकारी आपको दे रहा हूँ। अनंतनाग के कोकरानाग में आठ जुलाई, 2016 को दो-तीन आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में खुफिया जानकारी मिली थी। इस आधार पर सुरक्षा बलों द्वारा इलाके की घेराबंदी कर दी गई। मुठभेड़ के दौरान तीन आतंकवादियों को न्युट्रलाइज़ किया गया। पहचान करने के बाद पाया गया कि यह हिज़बुल मुजाहिदीन के कुख्यात आतंकी बुरहान मुज्जफ़र वानी, सरताज़ अहमद शेख और परवेज़ अहमद डार थे। जहां तक बुरहान वानी का सवाल है, वह एक कुख्यात आतंकवादी संगठन हिज़बुल मुजाहिदीन का कमांडर था, इसमें कहीं दो मत नहीं है, जो कि पाकिस्तान स्थित युनाइटिड जिहाद काउंसिल का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। युनाइटिड जिहाद काउंसिल, विभिन्न आतंकी संगठनों, जैसे कि लश्कर-ए-तैय्यबा, जैश-ए-मोहम्मद का एक युनाइटिड ग्रुप है, जो कि पाकिस्तान की हिदायत पर भारत में आतंकवादी घटनाओं को अंजाम देता है। आतंकी संगठन हिज़बुल मुजाहिदीन का मुख्यालय पाकिस्तान की राज़धानी इस्लामाबाद, रावलपिंडी में स्थित है। इसका सरगना सैयद सलाउदीन है। इसका बेस कैंप पाक अधिकृत कश्मीर के मुज्जफ़राबाद में स्थित है। बुरहान वानी हिज़बुल मुजाहिदीन का कुख्यात आतंकवादी था और दक्षिण कश्मीर में हिज़बुल मुजाहिदीन का कमांडर था। उसके खिलाफ 15 मुकदमें हत्या, हत्या के प्रयास, स्थानीय लोगों को गंभीर चोट पहुंचाने के और सुरक्षा बलों से हथियार और गोला-बारूद छीनने के, अवैध हथियार और गोला-बारूद रखने के और इस प्रकार के कई गंभीर आरोप हैं और उसकी एफ.आई.आर. भी दर्ज थी। कुल लगभग इस प्रकार के 15 मुकदमें उसके विरूद्ध दर्ज हैं। निश्चित रूप से वह एक टेक्नोलॉजी सेवी, नई पीढ़ी को रेडिक्युलराइज्ड कर उन्हें आतंकवादी गतिविधियों की ओर प्रेरित करता रहा है। सोशल मीडिया जैसे फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सअप पर नियमित रूप से स्टेटमेंट, वीडियो मैसेजेज और पिक्चर अपलोड कर युवाओं को हथियार उठाने के लिए उकसाता था। बुरहान वानी सहित इन आतंकवादियों के मारे जाने की खबर सोशल मीडिया पर फैली है।

महोदया, मैं सदन को यह भी जानकारी देना चाहता हूँ कि अभी हाल में ही हाफिज सईद जो कि पाकिस्तान में कुख्यात आतंकवादी है, उसने भी कहा कि कुछ दिन पहले ही हमारी बुरहान वानी से बातचीत हुई है। इसकी भी चर्चा उन्होंने की है। अब सिक्युरिटी फोर्सेज को इंटेलिजेंस इनपुट हासिल हुआ था, उस इंटेलिजेंस इनपुट के आधार पर सिक्युरिटी फोर्सेज ने इस प्रकार का आपरेशन किया था। उसके बाद जिस प्रकार के सूरते-हालात कश्मीर के अन्दर पैदा हुए, बहुत सारे लोग सड़कों पर निकल आए, स्टोन पेल्टिंग हुई। वैसे जहाँ तक सिक्युरिटी फोर्सेज का सवाल है, मैंने भी स्पष्ट निर्देश दिया था, आने पर प्रधान मंत्री जी ने भी स्पष्ट निर्देश दिया था, जितनी मैक्सिमम रिस्ट्रेन्ट एक्सरसाइज की जा सकती हो, सिक्युरिटी फोर्सेज को वह रिस्ट्रेन्ट एक्सरसाइज करनी चाहिए। यह हमारे प्रधान मंत्री जी ने भी कहा और मैंने बार-बार स्वयं सिक्युरिटी फोर्सेज के जो सीनियर ऑफिशियल्स थे, उनसे मैंने यह कहा। जो कुछ भी चार-छह दिनों के अन्दर हुआ, उसकी भी मैं आपको यहाँ पर जानकारी देना चाहता हूँ। लॉ एंड ऑर्डर इंसीडेंट्स पूरे कश्मीर के अन्दर 576 हुए और सिविलियन्स जिनकी मृत्यु हुई है, उनका नम्बर 38 है। जो सिविलियन्स घायल हुए थे, उनका नम्बर 2,180 है। अस्पताल से डिस्चार्ज किए गए सिविलियन्स 2,055 हैं और जो अस्पताल में अभी भी इलाज प्राप्त कर रहे हैं, ऐसे सिविलियन्स का नम्बर 125 है। सुरक्षा बलों के कार्मिकों की जो मृत्यु हुई है, उसमें एक की मृत्यु हुई है और यह भी सच है कि जो हमारी सिक्युरिटी फोर्सेज के अधिकारी और जवान घायल हुए हैं, उनका भी नम्बर कोई कम नहीं है, उनका नम्बर 1,739 है। इतने सिक्युरिटी फोर्सेज के जवानों के घायल होने के बावजूद जितना अधिकतम प्रिकॉशन लिया जा सकता था, जितना अधिकतम पेशेंस रखा जा सकता था, सिक्युरिटी फोर्सेज ने किया। हो सकता है कि कहीं न कहीं किसी से कोई गलती हो गई हो, इस सच्चाई को भी नकारा नहीं जा सकता है।

चर्चा के दौरान यह बात आई कि पैलेट गन का प्रयोग किया गया। मैं यह मानता हूँ कि क्राउड को रोकने के लिए नान लीथल वेपन का ही पहले प्रयोग किया जाना चाहिए और हमारे देश में यह परम्परा भी रही है। बताया गया कि नान लीथल वेपन्स में बहुत लोग घायल हुए। यह बात सच है, मैं उस नम्बर का भी यहाँ पर उल्लेख करना चाहूँगा। लोग घायल हुए, इसमें कहीं दो मत नहीं है, लेकिन जो मृत्यु हुई है नान लीथल वेपन के माध्यम से, वह केवल एक की हुई है और घायल जो हुए हैं, जिनकी आँखों में चोट लगी है, उनका नम्बर लगभग 53 है, जिनमें से 23 लोग हैं, जिनकी एक आँख में चोट लगी है। यह पैलेट गन का प्रयोग पहली बार हुआ हो, ऐसा नहीं है। इसके पहले भी पैलेट गन्स का प्रयोग क्राउड को रोकने के लिए हुआ है। यह वर्ष 2010 में हुआ है। मैं किसी सरकार पर आरोप नहीं लगाना चाहता हूँ, लेकिन उस समय भी इसका प्रयोग हुआ था। उस समय जो मृत्यु हुई थी, वह 6 लोगों की मृत्यु हुई थी और 98 लोगों की आँखों में गहरी चोट लगी थी। पाँच लोग उसमें पूरी तरह से ब्लाइंड हो गए हैं। यह वर्ष 2010 में हुआ है। मैं सदन को यह बताना चाहता हूँ कि नान लीथल वेपन्स का जहाँ तक सवाल है, हमारा यह मानना है कि जहाँ तक हो सके क्राउड को रोकने के लिए टीयर गैस का प्रयोग करना चाहिए, जहाँ तक हो सके हमें वाटर कैनन से क्राउड को रोकने की कोशिश करनी चाहिए। वैसे नान लीथल वेपन्स की श्रेणी जो बनी है, उसमें पैलेट गन्स भी आती हैं। मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि मैं एक एक्सपर्ट्स की कमेटी बनाऊँगा, जो कि यह देखे कि नान लीथल वेपन के रूप में पैलेट गन का जो प्रयोग किया जाता है तो इसके दूसरे अल्टरनेटिव क्या हो सकते हैं। इसके दूसरे ऑप्शंस क्या हो सकते हैं ताकि यदि कहीं पर क्राउड हो और यदि हम उसे रोकना चाहते हैं, तो उसका एक अल्टरनेटिव, जो इस नॉन पेलेट गन का नॉन लेथल वेपन हो सकता है, उसके माध्यम से वह कर सकें। इसलिए हमने फैसला किया है कि हम एक एक्सपर्ट कमेटी बनाएंगे, जो इस संबंध में अपनी रिपोर्ट दो महीने के अंदर देगी ताकि भविष्य में इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृति न हो सके।

जम्मू-कश्मीर में कुछ आतंकवादी घटनाओं की भी चर्चा मैं यहां पर जरूर करना चाहूंगा क्योंकि कल यह बात आई थी, कई माननीय सदस्यों ने यह सवाल खड़ा किया था कि टेररिस्ट इंसीडेंट्स बढ़े हैं। लेकिन, मैं उसके आंकड़ों को भी सदन के समक्ष रखना चाहूंगा। जहां तक इंसीडेंट्स का सवाल है, वर्ष 2012 में टेररिस्ट इंसीडेंट्स 220 हुए थे। वर्ष 2015 में यह 208 हुए हैं और उसके बाद अब तक 152 टेररिस्ट इंसीडेंट्स हुए हैं। सिविलियंस जो मारे गए, वर्ष 2012 में उनकी संख्या 15 थी, वर्ष 2014 में 28 थी और वर्ष 2015 में 17 थी और उसके बाद अब तक जो सिविलियंस मारे गए हैं, उनकी संख्या 5 है। यह मैं इस घटना के पहले की टेररिस्ट इंसीडेंट्स के बारे में बता रहा हूं। अब तक जो मिलिटैंट्स मारे गए हैं, वर्ष 2012 में लगभग 72 मिलिटैंट्स की कीलिंग हुई है। मैं यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि वर्ष 2015 में 108 मिलिटैंट्स की कीलिंग हुई है और उसके बाद 2016 में अब तक 86 मिलिटैंट्स की कीलिंग हुई है।

हमारे माननीय सदस्य कल्याण बनर्जी जी, जो शायद अभी यहां नहीं हैं, उन्होंने यह भी कहा था कि बहुत सारे मिलिटैंट्स बांग्लादेश के थ्रू भी प्रवेश करते हैं और वे पश्चिमी बंगाल में आते हैं। यह बात सच है। इंडो-बांग्लादेश की बाउंड्री का जहां तक सवाल है तो वह 4,096.7 किलोमीटर की है। इसमें रिवेराइन बॉर्डर करीब 930 किलोमीटर का है। लैंड बाउंड्री 3,166.7 किलोमीटर की है। इसमें लगभग 2727 किलोमीटर की फेंसिंग पूरी हो चुकी है। 400 किलोमीटर की बाउंड्री ऐसी है जिसकी फेंसिंग अभी तक नहीं हो पाई है। उसका कारण यह है कि फेंसिंग का काम करने के लिए जो लैंड एक्वीजीशन होना चाहिए वह कई एरियाज में नहीं हो पाया है। हम लोगों ने राज्य सरकार से भी अनुरोध किया था। लेकिन, अब मुझे सदन को यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि अब यह मामला शॉर्ट-आउट हो चुका है और जल्दी ही इंडो-बांग्लादेश का जो शेष भाग बचा हुआ है, उस पर भी हम फेंसिंग का काम पूरा करेंगे।

श्री अधीर रंजन चौधरी (बहरामपुर) : मंत्री जी, इंडो-बांग्लादेश की मैरीटाइम बाउंड्री के बारे में ज़रा सोचिए। वह एकदम खाली पड़ा है।

श्री राजनाथ सिंह : उस मामले को भी हम लोग देख रहे हैं।

श्री मोहम्मद सलीम (रायगंज) : आपने स्मगलिंग की बात नहीं की।

श्री राजनाथ सिंह : अभी स्मगलिंग और सारी चीज़ों की चर्चा नहीं करेंगे क्योंकि यहां पर कश्मीर स्पेसिफिक डिस्कशन हो रहा है।

महोदया, मैं इतना कहना चाहता हूं कि कभी-कभी जनमत संग्रह की बात हुई। कल ज्योतिरादित्य ने रायशुमारी की बात कही। मैं यह नहीं समझ पाया कि यह रायशुमारी क्या है?

माननीय अध्यक्ष : नहीं, उन्होंने शब्द बदल दिया है। उन्होंने चर्चा और संवाद के बारे में कहा है।

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया (गुना) : अध्यक्ष महोदया, मैंने आपको क्लैरिफिकेशन दे दिया है। मैंने संवाद और चर्चा की बात की है, रायशुमारी की नहीं।

श्री राजनाथ सिंह : बहुत अच्छा। धन्यवाद। ये सारी चीज़ें पूरी तरह से आउटडेटेड और इरेलेवेंट हो चुकी हैं।

कुछ माननीय सदस्यों ने कहा कि वहां पर एक पार्लियामेंटरी टीम भेजनी चाहिए ताकि वहां के लोगों के साथ संवाद कर सके और वहां के हालात को सामान्य बनाने की दिशा में वह प्रयास कर सके। मैं सदन को यह जानकारी देना चाहता हूं कि इस संबंध में जम्मू-कश्मीर की मुख्यमंत्री महबूबा जी से भी हमारी बातचीत हुई है। उन्होंने कहा कि थोड़ी स्थिति सामान्य होने के बाद मैं स्वयं दिल्ली आ रही हूं और इस संबंध में बातचीत करूंगी क्योंकि मैंने स्वयं अपनी भी इच्छा व्यक्त की थी कि मैं कश्मीर आना चाहता हूं और कश्मीर में मैं गवर्नर हाउस में नहीं रूकूंगा, बल्कि किसी गेस्ट हाउस में रूक कर कश्मीर के लोगों के साथ मैं सीधा संवाद स्थापित करना चाहता हूं। यह मैंने स्वयं अपनी तरफ से इच्छा व्यक्त की। उनका यही आग्रह था कि मैं कुछ ही दिनों के बाद दिल्ली आ रही हूं। आपसे बातचीत करने के बाद यह अच्छा होगा कि आप कश्मीर आएं और लोगों के साथ संवाद स्थापित करें। मैं समझता हूं कि दो-तीन दिनों के अंदर उन्हें आना चाहिए। आज आल पार्टी मीटिंग कश्मीर में उन्होंने बुला रखी है। अभी स्थिति धीरे-धीरे वहां पर सामान्य हो रही है।

कुछ लोगों ने कहा कि कर्फ्यू के दौरान इसेंशियल कमोडिटीज जो लोगों को उपलब्ध होनी चाहिए, वे उपलब्ध नहीं हो पा रही हैं, इसके बारे में भी सोचना चाहिए। ज्यों ही यह कर्फ्यू लगने का सिलसिला प्रारम्भ हुआ था, वहां के मुख्यमंत्री जी से मैंने बात की थी। उन्होंने शाम के समय, रात्रि के समय कर्फ्यू में ढील देने का भी उस समय आदेश दिया था और कर्फ्यू में अब ढील दी जा रही है। कुछ स्थानों पर इसेंशियल कमोडिटीज भी सरकार की तरफ से लोगों को मुहैय्या कराई जा रही हैं।

प्रेस पर प्रतिबन्ध का एक सवाल चर्चा के दौरान खड़ा हुआ था। मैं समझता हूं कि सभी को जानकारी यहां के माध्यम से हो गई होगी। वहां की मुख्यमंत्री जी का यह कहना था कि प्रेस पर हमारी तरफ से ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं लगा था, लेकिन थोड़े समय के लिए इंटरनेट वगैरह जैसी चीजों को ब्लॉक किया गया था वहां के हालात को देखते हुए, लेकिन जो कुछ भी प्रतिबन्ध था, जो कुछ भी थोड़ी-बहुत रोक थी, वह पूरी तरह से समाप्त कर दी गई है। यह जानकारी मुझे यहां पर दी गई है। ...(व्यवधान)

श्री तथागत सत्पथी (ढेंकानाल) : आज भी इंटरनेट नहीं चल रहा है। ...(व्यवधान)

श्री राजनाथ सिंह : सरकार ने बंद नहीं किया है। साथ ही यह भी कहा गया कि इंटरनेट के ऊपर बहुत सारी चीजें जो इस समय पोस्ट की जा रही हैं, एक चर्चा आई कि पुलिस का कोई व्यक्ति किसी लड़के को पैरों से दबा रहा है, मार रहा है, पीट रहा है, तो मैंने एक को निकालकर देखा, अब यह कहां तक सच है, कहां तक गलत है, मैं नहीं कह सकता हूं। यह तो उत्तर प्रदेश की घटना से संबंधित कोई फोटोग्राफ है। उसको भी वहां पर वायरल कराकर लोगों के अंदर एक उत्तेजना पैदा करने की कोशिश की जा रही है। यह बहुत पहले की कोई घटना है, यह उसका है, क्योंकि उस संबंधित अधिकारी को भी मैं अच्छी तरह पहचान रहा हूं, यह घटना वहीं की है। तरह-तरह की अफवाहें फैलाकर वहां के नौजवानों को लोग बरगलाने की कोशिश कर रहे हैं। मैं सदन को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि आप सभी के सहयोग से जम्मू-कश्मीर के हालात को सामान्य बनाने में हमें निश्चित रूप से कामयाबी हासिल होगी और मैं यह पुनः यकीन दिलाना चाहता हूं कि वहां के हालात को सामान्य बनाने में हम आप सभी का सहयोग प्राप्त करेंगे।

इन्हीं शब्दों के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद।

HON. SPEAKER: Now, 'Zero Hour'.

...(*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष : करूणाकरण जी।

â€¦(व्यवधान)

श्री रमेश बिधूड़ी (दक्षिण दिल्ली) : अध्यक्षा जी, ...(व्यवधान)

HON. SPEAKER: No questions. He has replied. It is okay.

...(*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष : अब शून्य काल।

â€¦(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : अब दोबारा प्रश्न नहीं।

â€¦(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : अब हो गया न, चर्चा हो गई।

â€¦(व्यवधान)

रसायन और उर्वरक मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्री (श्री अनन्तकुमार): यह सदन की परम्परा नहीं है। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप बैठिए।

â€¦(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Shri Hari wants to say something.

...(*Interruptions*)

SHRI G. HARI (ARAKKONAM): It is about construction of check dam in Palar River. ...(*Interruptions*)